विद्यालय में नागरिक शास्त्र का महत्व
[Importance of Civics in School]

अधिकारों के साथ हमें नागरिक के महान् कर्त्तव्यों का भी निर्वहन करना है, उन गम्भीर दायित्वों का भी सफलतापूर्वक निर्वाह करना है, जो हमारी स्वाधीनता ने हमें दिये है। इन अधिकारों के सच्चे उपभोग तथा दायित्वों के निर्वाह के लिए विद्यालय में नागरिकशास्त्र का अध्ययन करना आवश्यक है, क्योंकि नागरिक शास्त्र हमें यह सिखाता है कि अधिकार एवं कर्तव्य एक सिक्के के दो पहलू है जिनको अलग-2 नहीं किया जा सकता हैं अधिकार एवं कर्तव्य का सच्चा उपयोग करना चाहते है तो हमको अपने दायित्वों के सत्यनिष्ठा के साथ निर्वाह भी करना होगा। अतः नागरिकशास्त्र का इस दृष्टिकोण से बहुत महत्व है।

विद्यालयों में नागरिक शास्त्र के महत्व को और भी अधिक बढ़ा दिया। हम नागरिकों में नागरिक कुशलता, राष्ट्रीय समस्याओं को समझने एवं उनका समाधान करने की क्षमता, अनुशासन, सहिष्णुता, आत्म सम्मान, स्वेच्छा से आज्ञा पालन करने की भावना आदि गुणों का विकास करके उनको योग्य एवं कुशल नागरिक बनाने में समर्थ हो सकते है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

विद्यालय में छात्रों के दृष्टिकोण से भारत में नागरिकशास्त्र का बहुत अधिक महत्व है। आज के छात्र आने वाले कल के भावी नागरिक है, उन्ही लोगों को इस देश के सभी क्षेत्रों के कार्यो का भार अपने कन्धों पर उठाना है। अतः विद्यालय में नागरिकशास्त्र उनको इन कार्यो को करने में सहायता प्रदान करेगा। साथ ही अपने अधिकारों एवं दायित्वों से अवगत कराकर योग्य नागरिक बनाने में सहायता प्रदान कर सकेगा।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

नागरिकशास्त्र का अन्य विषयों से सम्बन्ध
[Relation of Civics with other subject]

1. नागरिकशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान :—

कुछ विद्वान ना०शा० व राजनीतिशास्त्र दोनों के बारे में यह मानते है कि ना०शा० की उत्पत्ती सिविटास से हुई है और रा०शा० की पोलिस से तथा दोनों का अर्थ नगर राज्य है। अतः दोनों एक ही है। परन्तु वास्तव में यह एक नही है। ना०शा० मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्धों के साथ-साथ राजनीतिक संगठनों का भी अध्ययन करता है जबकि राजनीतिशास्त्र राज्य तथा उससे सम्बान्धित विषयों का अध्ययन करता है। परन्तु यह दोनों विषय घनिष्ठ रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए है। ना०शा० राज्य तथा सरकार का ज्ञान प्रदान करके नागरिकों को सजग बनाने के साथ-2 उनके जीवन को साधन सम्पन्न करता है। ना०शा० की सीमा संकुचित है और रा० शा० का क्षेत्र व्यापक है। इसी कारण हम ना०शा० को रा०शा० का शिशु भी कहते है।

रा०शा० नागरिकों के अधिकारों पर बल देता है और ना०शा० नागरिकों के कर्तव्य पर। दोनों ही विषय की विषयवस्तु एक ही है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

2. नागरिकशास्त्र एवं इतिहास :—

ना० शा० का इतिहास से भी बहुत गहरा सम्बन्ध है। इतिहास अतीत की कहानी है जिसमें मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, नैतिक व सांस्कृतिक पक्षों का अतीत के सन्दर्भ में अध्ययन करते हैं। ना० शा० इसके विपरीत मनुष्य के वर्तमान व भावी जीवन की समस्याओं को सुलझाता है। इतिहास वस्तुतः नागरिकशास्त्र का मार्ग-दर्शक है।

इतिहास तथा ना० शा० दोनों ही विषय मानव जीवन से सम्बन्धित है। इतिहास मानव सभ्यता का लेखा-जोखा है और यह ना० शा० को दिशा प्रदान करने में सहयोग देता है और ना० शा० इतिहास के लिए घटनाएं प्रस्तुत करता है।

सीले का कथन है, "इतिहास के बिना ना० शा० निष्फल है और ना० शा० बिना इतिहास निर्मूल है।"

फ्रीमैन के शब्द— "इतिहास अतीत की राजनीति और राजनीति वर्तमान का इतिहास है।"

वास्तव में देखा जाये तो ना० शा० का इतिहास से वैसा ही सम्बन्ध है जैसा मनुष्य का खाने से अर्थात् इनमें परस्पर निर्भरता पाई जाती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया